ROLE OF TSAR ALEXANDER II (Part-1)

FOR: U.G.PART-2,PAPER-4
BY:ARUN KUMAR RAI
ASST.PROFESSOR
P.G.DEPT.OF HISTORY
MAHARAJA COLLEGE
ARA.

अलेक्जेंडर II (1855-1881)

अपने पिता निकोलस प्रथम की मृत्यु के पश्चात 1855 ई.में एलेग्जेंडर द्वितीय रुस का सम्राट हुआ ।वह एक उदार, सुधारवादी एवं स्वतंत्रता प्रिय व्यक्ति था। उसकी शिक्षा-दीक्षा में यूरोपीय साहित्य, दर्शन और सैन्य शिक्षा आदि का समावेश था और वह यूरोप में हो रहे आंदोलनों से परिचित था। उसने निकोलस की प्रतिक्रियावादी नीति के स्थान पर उदारवादी नीति का पालन किया। उसने बदली परिस्थितियों में रूस में आवश्यक सुधारों की आवश्यकता को परखा और राज्य रोहण के प्रथम 10 वर्षों में सुधारों का एक कार्यक्रम चलाया।

अलेक्जेंडर II

उसने दासों की मुक्ति के लिए कानून बनाए जिसके कारण उसे ***मुक्तिदाता जार*** (**Tsar,the liberator**)के नाम से जाना जाता है।

जिस समय निकोलस प्रथम की मौत हुई उस समय क्रीमिया का युद्ध चल रहा था अतः एलेग्जेंडर द्वितीय को उसी युद्ध से जूझना पड़ा और एक साथ विदेश नीति और गृह नीति की उलझनों को संभालना पड़ा। उसने देखा कि सारे यूरोप में रूस का कोई मित्र नहीं था। देश के अंदर सामंत और कृषक दास भी असंतुष्ट थे और निरंतर विद्रोह करते रहते थे।

अलेक्जेंडर II

- यातायात, रेलवे उद्योग आदि में रूस पिछड़ा था और युद्ध काल में यह पिछड़ापन रूस की कमजोरी सिद्ध हुई। यूरोप में समाजवादी आंदोलन भी आरंभ हो गया था ऐसी अवस्था में नये जार ने अपने युग की मांग के अनुसार सुधारों का सिलसिला आरंभ किया।

प्रारंभिक सुधार

- अलेक्जेंडर द्वितीय ने शासन में सुधार करना अनिवार्य समझा। इन सुधारों में निम्नलिखित उल्लेखनीय है-

1. पेरिस की संधि के बाद ही एलेग्जेंडर ने राजनीतिक अपराधियों को माफी दे दी।
2. प्रेस पर जो प्रतिबंध लगे हुए थे वह समाप्त कर दिए गए
3. विश्वविद्यालयों को स्वायत्त शासन दे दिया गया और उन में प्रत्येक वर्ग के छात्रों को प्रवेश मिल सकता था
4. विदेशी यात्रा पर लगे प्रतिबंधों को समाप्त कर दिया गया

दास प्रथा का अंत

- रूस में दास व्यवस्था एक सामाजिक कोढ़ बन गया था। मध्यकालीन युग से ही कृषक दासों की प्रथा चली आ रही थी और इसके कारण निरंतर विद्रोह होते रहते थे ।रूस में उस समय दासों की संख्या करीब चार करोड़ पचास लाख थी जिनमें से आधे राजकीय दास थे और आधे चर्च, सामंतों अथवा कुलीनों के दास थे। राजकीय दासों की हालत बेहतर थी। वे राज्य के जागीरो में काम करते थे परंतु उन्हें घूमने फिरने या भूमि क्रय की आजादी नहीं थी। वे **ग्रामों(Mir)** में रहते थे और उनकी अलग समिति थी।

दास प्रथा का अंत

- सामंती दासों पर सामंतों का पूर्ण अधिकार था ।वे सप्ताह में 3 दिन बेगार करते थे और उन्हें दंडित करने अंग भंग करने जमीन के साथ बेचने और खरीदने का भी अधिकार सामंत जागीरदारों को था। एलेग्जेंडर प्रथम ने दासों की मुक्ति के लिए कीमतें निर्धारित की थी परंतु वे इतनी अधिक थी कि बहुत कम दास मुक्त हो पाए। इधर सारे यूरोप में फ्रांस की क्रांति के पश्चात दास प्रथा का उन्मूलन हो चुका था और रुस के ही प्रांत पोलैंड ,लिथुआनिया तथा बाल्टिक क्षेत्रों में इस प्रकार की जंजीरे टूट चुकी थी।

दास प्रथा का अंत

- इन परिस्थितियों में जार अलेक्जेंडर॥ ने कहा कि बेहतर यही होगा कि दास प्रथा की समाप्ति उच्च वर्ग द्वारा ही कर दी जाए अन्यथा इसकी समाप्ति निम्न वर्ग के प्रतिनिधि स्वयं ही कर देंगे।
- प्रथम चरण में अलेक्जेंडर ने **1859** में शाही जागीरो के दासों की मुक्ति का ऐलान किया और बाद में **3 मार्च 1861** को एक **मुक्ति राजाज्ञा(**Edict of Emancipation) के द्वारा दासों की मुक्ति की घोषणा कर दी। इस कानून को पास कराने में ***म्लूटिन*** नामक एक मंत्री का बहुत हाथ था।

दास प्रथा का अंत

- राजाज्ञा के प्रकाशन के बाद सभी कृषक दास कानून की दृष्टि में स्वतंत्र नागरिक बन गए और उन पर सामंतों,भूस्वामियों, चर्च अथवा शाही अधिकारियों का अधिकार समाप्त हो गया। इसके साथ ही सामंतों की जमीन का एक भाग कृषि दासों के बीच में वितरित कर दिया गया और इसके लिए भूमि पतियों को राजकोष से हर्जाने की व्यवस्था की गई जिसे किसानों द्वारा 49 वर्षों में 6% ब्याज के साथ भुगतान करना था।

दास प्रथा का अंत

- किसानों और सामंतों के बीच भूमि वितरण समस्याओं के समाधान के लिए **शांति पंचों** (Arbiters of Peace)की नियुक्ति की गई। भूमि का स्वामित्व कृषक को न देकर कृषक समुदाय अथवा मीर(Mir) को हस्तांतरित कर दिया गया जो कि एक प्रशासनिक इकाई भी बन गया ।मीर ही भूमि पर खेती कराने और सामंतों को मिलने वाले हर्जाने की रकम चुकाने के लिए जिम्मेवार हो गया अतः मीर का नियंत्रण किसानों पर स्थापित हो गया।

दास मुक्ति का स्वरूप

- दासों की मुक्ति रूस की इतिहास में क्रांतिकारी कदम था। इससे कृषि का उत्पादन बढ़ा ।किसानों को रूसी समाज में विशेष स्थान प्राप्त हो गया। कृषक दासों की मुक्ति का एक सुखद परिणाम यह हुआ कि कारखानों में स्वतंत्र श्रमिकों की संख्या में वृद्धि हुई और औद्योगीकरण के विकास में ऐसे श्रमिकों की कुशलता ने महत्वपूर्ण योगदान दिये।
- **दोष-** जमीन के टुकड़े जो किसानों को दिए गए थे बहुत थोड़े थे एक परिवार के लिए अपर्याप्त थे।
- सामंतो ने किसानों की निर्धनता से लाभ उठाया। उन्होंने कृषकों को उस जमीन का जिसको वह जोतते थे ¼ भाग मुफ्त दे दिया तथा शेष भूमि पर

दास मुक्ति का स्वरूप

अपना अधिकार कर लिया

- इससे कृषकों को कोई विशेष लाभ नहीं हुआ और वह सामंतों के स्थान पर मीरों के अधीन कर दिये गये।ये मीर बहुत अत्याचारी थे इसलिए इस व्यवस्था का एकमात्र स्वामियों का परिवर्तन(Change of masters) कहते हैं।
- किश्तों का धन अधिक था। निर्धन किसान इतने बड़ी किश्तें अदा न कर सकते थे ।

To be continued.....